Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

शरद मिश्र के काव्य में शिल्प के प्रतिमान

अभिषेक एड़े* डॉ. नीना उपाध्याय**

* शोधार्थी (हिन्दी) रानीदुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) भारत
** प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी) माँनकुवर बाई शासकीय कला एवं वाणिज्य महिला महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – शरद मिश्र समकालीन हिंदी कविता के उन प्रमुख कवियों में हैं, जिन्होंने न केवल मानवीय संवेदनाओं को स्वर दिया, बल्कि काव्य-शिल्प की दृष्टि से भी नव्यता के प्रतिमान स्थापित किए। उनका काव्य पारंपरिक शिल्प से आगे बढ़ते हुए एक नवीन काव्यभाषा, प्रतीक योजना, बिंब विधान तथा संरचना के स्तर पर मौलिकता का संकेत देता है। शरद मिश्र उच्च शिक्षा विभाग से सेवानिवृत हिन्दीं विषय के प्राध्यापक है, उन्होंने कविताएँ , गीत, काव्यपत्र, हिन्दी गजलें, बुन्देली गजले लिखकर विपुल साहित्य की सर्जना तो की ही है, साथ ही संस्कृत के महाकवि बाणभट्ट एवं कालीदास के साहित्य का हिन्दी भाषा में 24 मात्राओं के छंद में काव्यानुवाद करके नया कीर्तिमान रचा है। अब तक शरद मिश्र की 400 से अधिक किताबें नये कलेवर में 23 खंड़ों में डॉ प्रणय के संपादन में प्रकाशित हो चुकी है। वर्तमान में भी उनकी लेखनी निरंतर चल रही है। इस शोध पत्र में शरद मिश्र की कविताओं के शिल्पगत पक्षों का गहन विश्लेषण किया गया है, जिसमें उनके प्रयोगधर्मी रचनात्मक दृष्टिकोण, भाषा की लयात्मकता, संरचनात्मक विविधता तथा अभिव्यक्ति के नये आयामों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है। यह अध्ययन स्पष्ट करेगा कि शरद मिश्र की काव्य-रचना में शिल्प केवल अभिव्यक्ति का ही माध्यम नहीं, बल्कि संवेदना के सार्थक अन्वेषण का उपकरण भी है। साथ ही यह अध्ययन उनके काव्य में शिल्प, अर्थ और अनुभूति का समुचित समन्वय की पड़ताल भी करेगा, जो उन्हें समकालीन हिंदी कविता के शिल्प विधान में एक विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

शब्द कुंजी – काव्य-शिल्प, बिंब, प्रतीक, भाषा, दृश्य-बिंब, श्रव्य-बिंब, काव्य-शैली।

प्रस्तावना – अभिव्यक्ति मानवीय मन की स्वाभाविक और अनिवार्य प्रवृत्ति है। जब मनुष्य इस चराचर जगत में विभिन्न दृश्यों, घटनाओं और अनुभूतियों का अवलोकन करता है, तब उसके अंतर्मन में उनसे सम्बद्ध भाव-चित्र स्वत: अंकित हो जाते हैं। ये भाव-तरंगें इतनी तीव्र होती हैं कि मौन में बंधकर नहीं रह सकतीय वे बाहर आने को आकुल हो उठती हैं। यही आकुलता अभिव्यक्ति की जन्मदात्री बनती है। साहित्य और कला के समस्त रूप – विशेषत: काव्य – इसी अभिव्यक्ति की सौंदर्यपूर्ण परिणति हैं। कवि अपने मनोभावों को आकार देने हेतु भाषा, बिंब, प्रतीक, अलंकार, छंद आदि काव्य-तत्त्वों का आश्रय लेता है। इन कलात्मक साधनों के माध्यम से वह अपने विचारों को सौंदर्यबोध से युक्त कर जनमानस तक पहुँचाता है। शरद मिश्र ने उनके काव्य में ये अभिव्यक्ति-साधन परंपरागत रूढ़ियों से हटकर एक नवीनता के साथ प्रकट हुए हैं, क्योंकि नवीन युगबोध और जटिल मानवीय अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने के लिए नूतन शिल्प और संवेदन की आवश्यकता होती है। शिल्प किसी भी काव्य की आत्मा को रूप देने वाला तत्तव है। यह न केवल कवि की संवेदनाओं को संप्रेषित करने का माध्यम होता है, बल्कि पाठक को काव्य की गहराइयों तक ले जाने का सेतु भी बनता है। शरद मिश्र समकालीन हिंदी कविता में उन कवियों में अग्रणी हैं, जिन्होंने न केवल विषय-वस्तु में नवीनता लाई, बल्कि शिल्प की दृष्टि से भी काव्य को नए प्रतिमान प्रदान किए। इस शोध का उद्देश्य उनके काव्य में प्रयुक्त शिल्पगत प्रयोगों, नवाचारों एवं उनकी कलात्मक विशेषताओं का विश्लेषण करना है।

शरद मिश्र की काव्य-संवेदना एवं उसका शिल्पगत अन्वेषण– शरद मिश्र की कविताएँ मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक विडंबनाओं और अस्तित्वगत प्रश्नों को एक मौलिक दृष्टि से प्रस्तुत करती हैं। उनके काव्य में अंतर्मन की गहन अनुभूतियाँ शब्दों के माध्यम से इस प्रकार ढलती हैं कि पाठक एक जीवंत अनुभव से गुजरता है। इस अनुभूति को प्रभावशाली रूप देने के लिए उन्होंने शिल्प को एक सक्रिय उपकरण के रूप में प्रयोग किया है। उनकी संवेदना में जहाँ एक ओर गहरे आत्मचिंतन की झलक मिलती है, वहीं दूसरी ओर समकालीन समाज की त्रासदियाँ भी बिंबित होती हैं। इन दोनों ध्रुवों के मध्य संतुलन बनाने के लिए शरद मिश्र ने भाषा, प्रतीक, शैली और संरचना जैसे शिल्पतत्त्वों को अत्यंत सृजनात्मक ढंग से साधा है।

1. भाषा-शिल्प – भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम मात्र ही नहीं है, वह वह सेतु है, जिससे एक व्यक्ति का सत्य दूसरे तक पहुँचता है। काव्य-शिल्प के उपादानों में प्राथमिक उपकरण भाषा ही है। शरद मिश्र की काव्य-भाषा बहुआयामी है, जिसमें सरलता और सादगी होते हुए भी विशिष्टता विद्यमान है। लयात्मकता और भावानुकूलता के साथ-साथ सपाट बयान और व्यंग्यात्मकता का भी अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। वे जहाँ एक ओर संस्कृतनिष्ठ शब्दों और अलंकारों से काव्य को गरिमा प्रदान करते हैं, वहीं दूसरी ओर सरल, सीधी और सपाट भाषा के माध्यम से आम जीवन की सच्चाइयों को बड़ी बेबाकी से प्रस्तुत करते हैं। उनकी भाषा में व्यंग्य का स्वर भी प्रमुखता से उभरता है-कहीं राजनीतिक भ्रष्टाचार पर करारा कटाक्ष तो कहीं सामाजिक ढोंग पर तीखा प्रहार-यह सब वे व्यंग्यात्मक शैली में कहते हैं, जिससे पाठक न केवल मुस्कराता है, बल्कि सोचने को भी विवश हो जाता है। लोकभाषा के प्रयोग से उनकी रचनाएँ और भी अधिक जीवंत और प्रभावशाली बन जाती हैं। इस तरह शरद मिश्र की भाषा केवल काव्य-सौंदर्य का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ का सशक्त दर्पण भी बन

जाती है। भाषा की सहजता का उदाहरण देखिये–

भिखारियों को भीख मत दे
इस पर अमल करने का
रहता है प्रयास।
पर माँगने वाले की शक्ल मिलती है कभी
मेरे पिता से
या फिर मेरे बेटे से
तो जेब से निकल ही जाता है कुछ
अनायास।।[1]

शरद मिश्र के काव्य की सपाट बयान बाजी यहाँ दृष्ट्व है–

नई पड़ रही है हिम्मत किसी की ,
कह तो दे नृप को नंगा।
जला दिये जायेंगे घर, फूँकेंगी दुकानें,
मारे जायेंगे कितने अलगू–जुम्मन[2]

शरद मिश्र ने अपने काव्य रूपांतरण में 'संस्कृतनिष्ठ' शब्दों के साथ–साथ शुद्धता, सरलता, लयात्मक भाषा का प्रयोग बहुतायत किया है। कादम्बरी काव्य रूपांतरण की भाषा के संबंध में डॉ. रमाशंकर शुक्ल लिखते हैं कि– 'डॉ. शरद मिश्र द्वारा रचित इस ग्रंथ की एक अलग विशेषता यह है कि इसमें सब कुछ पद्यमय है, गद्य का लेशमात्र भी स्थान नहीं है। सर्वाधिकार से लेकर पुस्तक के मूल्य तक का वर्णन छंद में है।'[3] भाषा पर ऐसा अधिकार की सब कुछ पद्य रूप में कह देना शरद मिश्र की विशेष प्रतिभा का परिचायक है। संस्कृतनिष्ठ शब्दों का सुन्दर संयोजन इस पद्य में अवलोकनीय है–

भवनों का तिलक सत्यभू अवन्तिका नगरी,
शोभित थी महाकाल, महादेव से नगरीय
वाराह ने किया ज्यों हिरण्याक्ष का विक्षेप ,
उज्जयिनी भी दिखाते हैं पाशों का निपेक्ष[4]

शरद मिश्र के कथ्य में भाषा के विविध रंग दृष्टिगोचर होते हैं। उनकी भाषा केवल अभिव्यक्ति का साधन मात्र न होकर संवेदना और विचारों का सशक्त माध्यम बन जाती है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जहाँ एक ओर संस्कृतनिष्ठ और साहित्यिक हिंदी का प्रयोग किया है, वहीं दूसरी ओर बुंदेली जैसी लोकभाषा की सहजता और जीवंतता को भी स्थान दिया है। विशेषकर बुंदेली सृजन में उन्होंने लोकजीवन की भाषा की मौलिकता को बनाए रखने में अत्यंत कुशलता एवं प्रौढ़ता का परिचय दिया है। यही कारण है कि उनकी कविताएँ स्थानीय बोली–बानी की सोंधी महक और यथार्थ का आंचलिक सौंदर्य लिए हुए प्रतीत होती हैं। बुन्देली भाषा काव्य का उदा–

खा जैहौ गारीं तौ दइयौ नैं खोरी
ए देवरा रे! आज नैं खेलौ होरी!!
महँगी भई चीजें कैंसी गुजर है।
जा साल की होरी ऊँसइ निकर है।।
महँगाई ने सबकी कम्मर है टोरी।
ए देवरा रे! आज नैं खेलौ होरी।।[5]

शरद मिश्र ने अपने काव्य में नवीन प्रयोग करते हुये हिन्दी के कवियों की चौपाई , पंक्तियों का यत्र– तत्र प्रयोग किया है जो कि उनके काव्य की भाषा को और भी आकर्षक और अर्थवान बनाता है यथा उदा.–

पहुँच चुके सब एक दिन पूर्व
अगले दिन भांजेंगे तलवारें, दिखायेंगे हुनर
जनायेंगे जिसे आपा, फिर वह–
'जानत तुमहिं तुमहिं होई जाई'।।
अगर 'मुक्तिबोध' की मानें तो उन महागुरूओं को–
अब अभिव्य क्ति के सारे खतरे उठाने ही होंगें।।[6]

हिन्दी के आदिकालीन कवि विद्यापति की पंक्ति प्रसिद्ध है कि – 'देसिल बअना सब जन मिट्ठा अर्थात देशी भाषा (बोलचाल की भाषा) सबको मीठी लगती है'।[7] शरद मिश्र ने अपने काव्य में लोकभाषा के शब्दों का प्रयोग भी किया है जो उनके भावों की अभिव्यक्ति को सरल और सशक्ता बनाती है उदा.–

बसमतिया से जंगल में जबरजिना का,
गवाह थे बहुतेरे धान कटैया,
कुछ चरवाहे– कुछ हरवाहे,
रो–रोकर बता रही थी बसमतिया,
परधनवा भी सुन रहा था दाँत निपोरे,
कोयल–पपीहे भी यही टेर लगा रहे थे।
पोंड़की–तीतर तक नियाव की आस जगा रहे थे।[8]

शरद मिश्र के काव्य की भाषा के संबंध में उनके काव्य पर शोध कर चुकी डॉ. मनीषा द्विवेदी लिखती है, कि 'डॉ. शरद कुमार मिश्र की भाषा सहज– सरल होते हुये भी अर्थ– गाम्भीर्य से युक्त हैं। कहीं– कहीं यह भाषा इतनी सहज हो गई है कि इसे आम आदमी की आम भाषा कहा जा सकता है।'[9] शरद मिश्र की भाषा आम आदमी की जुबान है, वर्तमान की भाषा है, उसमें एक विशेष प्रकार का अनगढ़पन है, । भाषा के अनगढ़पन का उदा.प्रस्तुत है–

दो समधियों में जुड़ गया संबंध प्यार का ।
टी.बी. पर फ्रिज पर हाँ हुई झगड़ा था कार का ।।
सामान न हो नेग में तो कैश दीजिये।
पालेंगे नहीं हम कोई लफड़ा उधार का ।।[10]

शरद मिश्र की काव्य–भाषा बहुस्तरीय और प्रभावपूर्ण है, जो शुद्ध साहित्यिकता के साथ–साथ व्यावहारिक जीवन की सच्चाइयों को भी समेटे हुए है। उनकी भाषा में संस्कृतनिष्ठ गरिमा, लोकभाषा की मिठास, सपाट बयानों की सादगी और व्यंग्य की तीक्ष्णता एक साथ दिखाई देती है। यही विशेषताएँ उनकी भाषा को न केवल काव्यात्मक सौंदर्य से युक्त बनाती हैं, बल्कि सामाजिक चेतना और संवेदना का भी प्रभावशाली माध्यम बना देती हैं।

2. बिंब एवं प्रतीक– 'काव्य में बिंब और प्रतीक दोनों ही महत्वपूर्ण हैं किन्तु संश्लिष्ट अर्थ– छायाओं को मूर्त करने की दृष्टि से 'बिंब' का महत्व अधिक है। प्रतीक और बिंब दोनों की चर्चा प्रायरू साथ में होती है। इसका कारण यह है कि दोनों ही मूर्ति– विधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है किन्तु दोनों में पर्याप्त अंतर होता है। बिंब जब बार– बार प्रयुक्त होकर किसी वस्तु या भावस्थिति – विशेष के द्योतक बन जाते हैं तब उन्हें प्रतीक मान लिया जाता है।'[11] शरद मिश्र समकालीन हिंदी कविता के उन सशक्त रचनाकारों में हैं, जिनके काव्य में बिंब योजना अत्यंत समृद्ध, सघन और बहुस्तरीय है। वे बिंबों के माध्यम से केवल दृश्य रचते भर नहीं, बल्कि पूरी सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संरचना को उद्घाटित करते हैं। शरद मिश्र के यहाँ बिंब योजना दृश्य, श्रवण, स्पर्श, भाव, वस्तु, प्रतीक, और विवृत बिंबों के सहारे एक ऐसी रचना प्रक्रिया का निर्माण करती है, जो कविता

को दृश्य नहीं, अनुभव का प्रमाण बनाती है। शरद मिश्र की कविताओं प्रयुक्त बिंब–

दृश्य बिंब – ये बिंब आँखों के सामने किसी नेता के आगमन के आयोजन की तैयारी का दृश्य उपस्थित कर देते हैं। उदा.–

'बड़ी सुहानी है सुबह कस्बें की,
चार बजे भोर में ही चली है खर्राटा झाड़एँ,
नहीं है सड़क पर एकौ धूल
चुभती कहाँ है नंगे पाँव कोई काँकरी।
बड़े किये है लोगों ने अपने दिल,
चौड़ी हुई है ,प्रेम गली साँकरी।।
डाला है ट्रैक्टर ने सड़क पर पानी,
जगमगा रही है दिन में रोशनी', [12]

श्रवण बिंब – ये ध्वनि से जुड़ी संवेदना को जगाते हैं।उदा.

'बताया जा रहा है–
रिक्शो में बँधवाकर चोंगा, आटो से चिल्लाकर,
सुन रहे हैं मोटरियों में बैठे,
कुछ पढ़े लिखों को अखबार है।' [13]

वस्तु बिंब –वह बिंब जो किसी ठोस भौतिक वस्तु को इस तरह चित्रित करता है कि वह प्रतीक बन जाए। शरद मिश्र की कविता में खजूर को वस्तु बिंब के प्रयोग इस प्रकार किया गया है कि खजूर अबला स्त्री का प्रतीक बन जाये।

'इधर बाहर मीटिंग में हजूर,
उधर भीतर कमरे में सकुचाया खजूर,
पोथी– पन्ने की समेटा– समाटी,
बँट गई हिसाब से रोटी दाँत काटी,
हजूर का तब कमरे में जा समाना।
गिराना लाल देखकर सहमे खजूर को,
पुचकारना, आँखें दिखाना,धौंस जमाना
मुँह फाड़ना बारबार खाने के लिये,
भिड़ा था खजूर अपने आपको बचाने के लिये' [14]

3. प्रतीक योजना – शरद मिश्र समकालीन हिंदी कविता के उन रचनाकारों में प्रमुख हैं, जिनकी कविता सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक यथार्थ की तीव्र पड़ताल करती है। उनके काव्य की एक विशेष उपलब्धि है – प्रतीक योजना की बौद्धिक गहराई और काव्यात्मक सघनता। वे प्रतीकों के माध्यम से अपने समय के संकटों को न केवल उजागर करते हैं, बल्कि उन्हें एक व्यापक दार्शनिक और मिथकीय आयाम भी प्रदान करते हैं। शरद मिश्र के प्रतीक परंपरागत नहीं हैं – वे न तो केवल सौंदर्यबोध के उपकरण हैं, न ही शुद्ध कल्पना के उपज वे यथार्थ की उपज हैं, उनकी कविता में महाभारत के चरित्र और घटनाएँ आधुनिक संदर्भों में प्रतीक रूप में प्रयुक्त होती हैं। यथा–

'वर्ग भेद करते अमानुष,
अर्जन के लिये
एकलव्य से पक्षपात करते द्रोणाचार्य
न घुस पाये गुरूकुल में' [15]

शरद मिश्र आज के समाज के यर्थात को नवीन प्रतीकों के माध्यम से कहने में सफल है। एक और उदा द्रष्टवय हैं–

'हजूर ,यह हमारे देश
का सबसे बड़ा सम्मानित भिखारी है!
यह भिक्षावृत्ति ही तो
हमारी सर्वोच्य कलाकारी है !!
भीख माँगते हैं इसके संग–
स्टेशनों और ट्रेनों में
हिंजड़े, पुलिस वाले, टीटी,
प्रमाण पत्र दिखाते हुये
देवी देवता के चित्रों पर' [16]

शरद मिश्र ने अपनी कविताओं में प्रतीकों को बड़ी ही कौशलता से गढ़ते है। परिणाम स्वरूप उनके प्रतीक भावों के उद्घाटन और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के प्रभावी माध्यम बनते हैं। कवि ने सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक यथार्थ को उकेरने के लिए ऐसे प्रतीकों का सहारा लिया है जो जीवंत, सशक्त और समयानुकूल हैं। ये प्रतीक पाठक के मन में सहज बोध उत्पन्न करते हैं और जटिल अनुभूतियों को सरल एवं ग्राह्य बना देते हैं। इसी कारण शरद मिश्र की प्रतीक योजना में एक ओर कलात्मकता का वैभव दिखाई देता है तो दूसरी ओर सामाजिक सरोकारों की गहरी अभिव्यक्ति भी उभरकर सामने आती है।

'सर्कस –
चला है नये तरीके का ,
जाता है दिखाने
अपना खेल बिदेसों में अब
नहीं होते पर
इसमें आजकल
चौपाये एक भी कहीं,
सारे दो पाये ही,
बुद्धि पर वैसी ही कुछ !
होता है मालिक इन सबका
रिंग मास्टकर या मेट एक
इकट्टा करता है
चंदा इन दोपायों से
वेतन– उजारत देने की जगह' [17]

उपरोक्त विवेचन से कहा जा सकता है कि – शरद मिश्र का काव्य बिंब योजना एवं प्रतीकों की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है, जहाँ बिंब यथार्थ का संवेदनात्मक उद्घाटन हैं। उनके बिंब सामाजिक विमर्श को गहराई प्रदान करते है, और पाठक को देखने से आगे समझने और महसूस करने की ओर ले जाते हैं। साथ ही, उनकी प्रतीक योजना भी उनके काव्य को एक सघन और वैचारिक स्वरूप प्रदान करती है। वे प्रतीकों के सहारे कालजयी मिथकों और समकालीन यथार्थ के बीच एक ऐसा सेतु निर्मित करते हैं, जो पाठक को केवल कविता के सौंदर्य में नहीं, बल्कि उसके भीतर छिपे प्रश्नों, प्रतिरोधों और हस्तक्षेपों में भी सहभागी बनाता है। इस प्रकार शरद मिश्र का काव्य साहित्यिक कला और सामाजिक चेतना का एक अद्धितीय संगम बन जाता है, जहाँ बिंब और प्रतीक दोनों ही संवेदना और विचार के वाहक बनकर उपस्थित होते हैं।

4. शैली और संरचना– शरद मिश्र अपनी कविताओं गजलों के शीर्षक से ही अपनी विशिष्ट शैली का परिचय देते है, जैसे तुम्हारे लिये, सबके

लिये, चलो गायें गीत प्यार के, आओं अपनी तुम्हारी बात करे, वे पाठकों से एक अंतरंग संवाद स्थापित करते हैं, मानो वे कविताओं, गजलों के माध्यम से अपने विचारों, अनुभवों और भावनाओं को सीधे उनके हृदय में प्रवाहित कर रहे हों। वे पाठक से केवल पढ़ने की नहीं, सोचने और महसूस करने की भी अपेक्षा रखते है। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ आत्ममंथन को प्रेरित करती हैं । वे कभी 24 मात्राओं के छंद में कविता गढ़ते है, तो कभी तंग काफिये की गजल कहते है। वे कभी अपनी कविता को छंद के मुक्ति दिलाते है तो कभी कालीदास ,बाण के गूढ़ साहित्य को हिन्दी भाषा के 24 मात्राओं के छंद़ में बांधते है। वे संवादात्मक शैली, आत्ममंथनपरक शैली ,विचारोत्तेजक शैली से काव्य को पुष्ट करते हैं।

संवादात्मक शैली का उदा–

मत दो रंग बिरंगी किताबें,
हटा दो–
अष्टावक्र की कूबड़ सा
पीठ पर धरा बस्ता[18]

आत्ममंथनपरक शैली का उदा–

अजादी दिलाई थी जिसने
अहिंसा जिसका परम सहारा था।
उस लँगोटधारी को भी तो
ऐसे ही शस्त्र ने मारा था।।[19]

विचारोत्तोजक शैली का उदा.

इक रूपहल गान होना चाहिए।
अब तो सब आसान होना चाहिए।।[20]

5. लय और गति– यद्यपि उनकी कविता छंदबद्ध नहीं है, परन्तु उसमें उपस्थित कथानक में स्वाभाविक लय और विचार की गति विद्यमान रहती है, जो पाठक को बाँधकर रखती है। उदा.

जहर डगर डगर है, जहर नगर नगर हैय
है जहर कस्बे–कस्बे, गाँव–गाँव है।
डूबने में है–उतरने में है,
हर ठिकाने है, जहर हर ठावँ है।।[21]

समकालीनता और शिल्प – समकालीन हिंदी कविता ने विषय के साथ–साथ अभिव्यक्ति के ढंग में भी व्यापक परिवर्तन देखा है। शरद मिश्र इस प्रवृत्ति के संवाहक कवि हैं, जिन्होंने परंपरागत शिल्प से हटकर एक ऐसा शिल्प अपनाया है जो समय की जटिलता, विडंबनाओं और द्वंद्वों को प्रभावी ढंग से उजागर करता है। उनकी कविताओं में प्रयुक्त प्रतीक समकालीन जीवन के गहरे अनुभवों से उपजे हैं। भाषा विचारशील है, संरचना प्रयोगधर्मी है और शैली आत्मीय है। यही विशेषताएँ उनके शिल्प को समकालीन कविता की मुख्यधारा में एक विशिष्ट पहचान दिलाती हैं।

निष्कर्ष – शरद मिश्र का काव्य समकालीन हिंदी कविता की उस धारा का प्रतिनिधित्व करता है, जो केवल भाव की प्रखरता तक सीमित नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति की दृष्टि से भी सजग और प्रयोगशील है। उन्होंने शिल्प को केवल सौंदर्य का साधन न मानकर संवेदना के संप्रेषण का सक्रिय माध्यम बनाया है। उनके काव्य में प्रयुक्त शिल्पगत तत्त्वकृभाषा, बिंब, प्रतीक, लय, शैली एवं संरचना–सभी समकालीनता से अनुप्राणित हैं और उन्हें एक सशक्त काव्य–व्यक्तित्व प्रदान करते हैं।यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि शरद मिश्र के काव्य में शिल्प और संवेदना का गहन और संतुलित संगम विद्यमान है, जो उन्हें समकालीन हिंदी कविता में एक विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. डॉ. प्रणय संपादक, शरद सर्जना ,नई कविता खंड एक, कविता– हजूर, पंकज बुक्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 2020,पृ.सं. 28.
2. डॉ. प्रणय संपादक, शरद सर्जना ,नई कविता खंड एक,कविता– लाली देखन मैं गई , पंकज बुक्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 2020,पृ.सं 524
3. दैनिक समय शहडोल , कादम्बरी का काव्य रूपांतरण– डॉ रमाशंकर शुक्ला, संस्करण अगस्त 1994
4. डॉ. प्रणय संपादक, शरद सर्जना, महाकाव्य खंड 11, कादाम्बरी गाथा, पंकज बुक्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 2022,पृ.सं.37
5. डॉ. प्रणय संपादक, शरद सर्जना ,खड़ी बोली – बुन्देली काव्य खंड सात, कविता– बंधा पंकज बुक्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 2022,पृ.सं. 378.
6. डॉ. प्रणय संपादक, शरद सर्जना ,नई कविता खंड एक, कविता– शोध संगोष्ठी, पंकज बुक्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 2020,पृ.सं. 60,61
7. शुक्ल आचार्य रामचंद्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली1, आवृत्ति संस्करण 2015 पृ.सं. 15
8. डॉ. प्रणय संपादक, शरद सर्जना ,नई कविता खंड एक, कविता– नियाव पंकज बुक्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 2020,पृ.सं. 199
9. द्विवेदी डॉ. मनीषा, डॉ शरद कुमार मिश्र – स्वरूप एवं सजृन, शेखर प्रकाशन इलाहबाद, प्रथम संस्कणरण 2003, पृ.सं. 127
10. मिश्र डॉ. शरद कुमार, सबके लिये गजल संग्रह, रचना प्रकाशन शहडोल म.प्र., प्रथम संस्करण जनवरी 1993, पृ.सं.28
11. तिवारी डॉ. रामचन्द्र ,भारतीय व पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी–आलोचना, विश्व विद्यालय प्रकाशन बाराणसी, तृतीय संस्करण 2016 पृ.सं.174
12. डॉ. प्रणय संपादक, शरद सर्जना , नई कविता खंड दो, कविता– पधराई उनकी, पंकज बुक्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 2020,पृ.सं. 143.
13. वही पृ.सं.142
14. वही पृ सं.130
15. डॉ. प्रणय संपादक, शरद सर्जना, नई कविता खंड एक, कविता– तो दो, पंकज बुक्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 2020,पृ.सं. 21
16. डॉ. प्रणय संपादक, शरद सर्जना ,नई कविता खंड तेरह, पंकज बुक्स दिल्ली , प्रथम संस्करण 2022,पृ.सं. 49
17 वही पृ.सं.62
18 . डॉ. प्रणय संपादक, शरद सर्जना, नई कविता खंड एक, कविता– हजूर, पंकज बुक्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 2020,पृ.सं. 21
19. वही पृ.सं.38
20. मिश्र डॉ. शरद कुमार, तुम्हाकरे लिये गजल संग्रह, रचना प्रकाशन शहडोल म.प्र., प्रथम संस्करण जनवरी 1992, पृ.सं.31
21. डॉ.प्रणय संपादक, शरद सर्जना ,नई कविता खंड एक, कविता– जहर, पंकज बुक्स दिल्ली, प्रथम संस्करण 2020,पृ.सं. 135